पाकिस्तान रेडियो से जो वार्तायें होती है तथा जो लन्दन के हमारे इंडिया हाउस में उनका जो कारनामा हुआ और कल जो काबुल में हुआ वह भी बड़ा ही निन्दनीय है, इस परिस्थिति में मैं जानना चाहूंगा कि पाकिस्तान की ओर से जब भारत के प्रति इस तरह का रवैया है तो ऐसी स्थिति में क्या किसी तरह की बात करना सम्भव होगा ?

श्री सुरेन्द्रपाल सिंह: इस सवाल का जवाब पहले कई दफे दिया जा चुका है। यह बात सही है कि पाकिस्तान के साथ जो शिमला समझौता हुआ है उस पर वह पूरे तरीके से अमल नहीं कर रहा है। यह बात भी सही है कि पाकिस्तान रेडियो में वक्तन फवक्तन इंडिया के खिलाफ प्रोपागन्डा होता रहता है। लेकिन इसके यह माने नहीं हैं कि उन से कोई बात-चीत नहीं करनी चाहिये। बात चीत जारी रहना जरूरी है। इस बात-चीत का चलना रहना हमारे हित में भी है और पाकिस्तान के हित में भी है। हमने कई दफे कहा है कि इस किस्म का प्रोपागन्डा बन्द होना चाहिये। मैं उम्मीद करता हूं कि वहां हमारे कहने सुनने पर ध्यान दिया जायेगा। अल्टिमेटली यह दोनों देशों के हित में होगा कि हम एक साथ बैठ कर फैसला कर लें। इस सिलसिले में हमारी कोशिशें जारी रहनी जरूरी है।

श्री हुकम चन्द कछवाय: मन्त्री महोदय ने अभी एक प्रश्न के उत्तर में बतलाया कि प्रस्ताव वापस लेने की कोई बात नहीं है। मैं जानना चाहता हूं कि यदि पाकिस्तान हमारे प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करता तो हम कितने दिनों तक उन को वापस लेने के लिये इन्तजार करेंगे ? मैं यह भी जानना चाहता हूं कि यह प्रस्ताव हमने कितने समय पूर्व दिये थे। अगर वह हमारे प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करते हैं तो क्या हम कोई कदम इस कार्रवाई के खिलाफ उठायेंगे ? क्या मंत्री महोदय ऐसा नहीं मानते कि इस प्रस्ताव को स्वीकार न कर के वह एक प्रकार से छिपे रूप से उस को ठुकरा रहे हैं ?

श्री सुरेन्द्रपाल सिंह : इन्टरनेशनल मामलों में ऐसा नजरिया नहीं बनाना चाहिये कि हम कोई प्रस्ताव देते हैं और दूसरा उसको फौरन एक्सेप्ट न करे तो हम उस को विदड्रा कर लें। हमने कुछ सुझाव दिये हैं, उन के कुछ सुझाव आये हैं, वह और बात-चीत करना चाहते हैं इस सिलसिले में कोई टाइम लिमिट रखने की बात नहीं है। हम कह चुके हैं कि बंगला देश गवर्नमेंट से हम कन्सल्टेशन कर रहे हैं। जब हमारी बातें खत्म हो जायेंगी तब हम पाकिस्तान को जवाब दे देंगे। ऐसे मामलात में कोई टाइम लिमिट नहीं रहनी चाहिये। आखिर तक बात चीत चलती रहनी चाहिये।

Action on petition sent by a member of Cantonment Board, Jullundur

*945 PROF. MADHU DANDAVATE: Will the Minister of DEFENCE be pleased to state.

(a) whether an elected member of the Cantonment Board, Jullundur, Punjab had sent a petition to the G.O.C.-in-Chief, Headquarter Western Command, Simla for setting aside certain Resolutions of the Board which went against the Education Rules;

(b) if so, what action has been taken by the G.O.C.-in-Chief Western Command on the Petition; and

(c) if not, the reasons thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF DEFENCE (SHRI J. B. PATNAIK): (a) It is a fact that an elected member of the Cantonment Board, Jullundur, submitted a petition to the GOC-in-C Western Command for setting aside a decision of the Cantonment Board wherein the Board rejected his motion for the abolition of the post of 3rd Punjabi teacher in the Higher Secondary School maintained by the Board. The Board decided to re-designate the 3rd Punjabi teacher as Classical and *vernacular* Teacher and did not consider him surplus to the requirements of the School.

(b) and (c) The matter is pending with the GOC-in-C, Western Command.

PROF. MADHU DANDAVATE: I am glad that the matter is being investigated. They are trying to find a way out. But, I would like to ask one question. When an elected Member, in the interest of democratic functioning, had demanded that certain documents like educational code, workload etc. should be made available to him so that a proper discussion can take place, why was this document not made available to the person concerned?

SHRI J. B PATNAIK: I do not have the information required by the hon. Member in this regard. So, I won't be able to reply to this question.

PROF. MADHU DANDAVATE: The hon. Minister has not carefully gone through the material that is required to answer the question. I think he can go through it and can answer afterwards On the face of it, he has not looked into the matter.

SHRI J. B. PATNAIK: He has only questioned the retention of a third Punjabi teacher on the ground that it would be surplus to the requirements of the Board. That has been considered by the Board at a subsequent meeting It was found that a third Punjabi teacher will not be surplus to the requirements of the Board. He was re-designated as vernacular teacher as has been said earlier So, all the information that is required in this case is available.

PROF. MADHU DANDAVATE: That was not my question My question was that before arriving at a decision, certain documents had to be looked into. The elected member wanted to look into the document which was denied to him. I want to know why the document was denied to him when demanded?

SHRI J. B. PATNAIK: No such complaint was made in this regard. If there is any such complaint, I shall look into it.

विदेशों द्वारा भारतीय मैट विमानों की खरीद

*947. **श्री विभूति मिश्र**: क्या रक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या विभिन्न देशों ने भारतीय "मैट" विमान खरीदने के लिए आदेश दिए हैं ;

(ख) यदि हां, तो उन देशों के नाम क्या हैं ; और

(ग) प्रत्येक देश ने कितनी-कितनी संख्या में ऐसे विमान मांगे हैं ?

रक्षा मंत्रालय (रक्षा उत्पादन) में राज्य मंत्री (श्री विद्या चरण शुक्ल) (क) जी नहीं श्रीमन्।

(ख) प्रश्न नहीं उठता।

(ग) केवल कुछ प्रारम्भिक पूछ ताछ की गई है। ऐसे देशों के नाम बताना जनहित में नहीं होगा।

श्री विभूति मिश्र: सुरक्षा की दृष्टि से मंत्री जी ने देशों के नाम नहीं बतलाये इसके लिये उनको धन्यवाद। क्या मंत्री महोदय यह बतला सकते हैं कि उन देशों की तादाद कितनी है जहां से "मैट" विमानों की मांग आई है और क्या "मैट" चलाने के लिये उन देशों ने हमारे देश के चालकों की भी मांग की है ?

श्री विद्या चरण शुक्ल: इन देशों ने प्रारम्भिक पूछताछ की थी, लेकिन उन्होंने उस तादाद का कोई संकेत नहीं किया था कि कितनी आवश्यकता होगी जब तक प्रारम्भिक बात चीत में बाकी चीजें तय न हो जायें तब तक तादाद का सवाल नहीं उठाया जाता। यदि इसके बारे में मामला और आगे बढ़ा और हमने उन को अपने हवाई जहाज देने का फैसला किया तब चालक इत्यादि और प्रशिक्षण देने की बात साथ-साथ तय की जायेगी।

श्री विभूति मिश्र: मैं जानना चाहता हूं कि हमारे देश में जितने मैट विमान तैयार होते हैं क्या वह हमारे देश के लिये काफी हैं ? यदि काफी हैं तो क्या हम इस पोजीशन में हैं कि